सरदार वल्लभभाई पटेल की १४२ वीं जयंती और राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर दूतावास द्वारा आयोजित समारोह में <u>मिशन प्रभारी प्रमुख श्री अमित नारंग का मुख्य संदेश</u>

आमंत्रित अतिथिगण,
चीन में शिक्षा प्राप्त कर रहे भारतीय मित्रों
और दूतावास के अधिकारीगण,

सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्मदिन और राष्ट्रीय एकता दिवस पर मेरी शुभकामनाएँ.

सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती जिसे आज हम 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के तौर पर मना रहे हैं, यह बहुत ही गौरव की बात है. मैं मानता हूँ कि भारत सरकार की यह पहल बहुत ही सराहनीय है.

तीन प्रश्न मेरे दिमाग़ में आते हैं, बहुत ही सरल से प्रश्न हैं.

सरदार वल्लभभाई की जयंती को क्यों मनाया जाए?
इस जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के तौर पर क्यों मनाया जाए?
और राष्ट्रीय एकता दिवस क्यों होना चाहिए?

पहला सवाल सबसे आसान है, सभी जानते हैं कि सरदार वल्लभभाई पटेल एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे, उनके बारे में बचपन से हम स्कूल के किताबों में पढ़ते आ रहे हैं, एक दूरदर्शी नेता भी थे. स्वतंत्रता के बाद उन्होंने भारत सरकार में पहले गृह मंत्री के तौर पर बहुत महत्वपूर्ण कार्य किए, कहा जा सकता है के वो TRUE SON OF INDIA हैं, भारत के

सपूत हैं, इसलिए उनकी जयंती को विश्वभर में भव्य तरीक़े से मनाना, मैं मानता हूँ, बहुत स्वाभाविक सी बात है. शायद इसपर पहले उतना ज़ोर नहीं दिया गया जो अब दिया जा रहा है, लेकिन मैं मानता हूँ के उनकी जयंती को अच्छे तरीक़े से मनाना बहुत आवश्यक है.

दूसरा सवाल, इस जयंती को एकता दिवस के तौर पर क्यों मनाया जाता है?
१५ अगस्त १९४७ को जब भारत को स्वतंत्रता हासिल हुई, तो भारत एक देश नहीं था, ५०० से ज़्यादा नवाब और राजा थे, हैदराबाद, जम्मू-कश्मीर थे जो युरोप के आज के फ़्रान्स, जर्मनी जितने बड़े प्रांत थे.

तो १५ अगस्त १९४७ के बाद ये स्वाभाविक नहीं था के हम एक देश बनेंगे. आज हम स्वतंत्रता को बहुत Natural मानते हैं. आज भारत एक है, इसे संभव किया सरदार वल्लभभाई पटेल ने.

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने आज के भाषण में इसका उदाहरण दिया है, और उन्होंने याद दिलाया है कि भारत के सबसे पहले राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद ने भी इस बात को कहा था कि आज हमें सोचने और बोलने के लिए भारत का ये नाम जो मिला है, इस नाम को बोलने का हक़ हमें सरदार वल्लभभाई पटेल ने दिया है, यह सम्भव हुआ सरदार वल्लभभाई पटेल की statesmanship से, आज अगर हम सब अपने आप को भारतवासी कहते हैं, एक हैं, इसपर गर्व महसूस करते हैं तो इसका श्रेय जाता है सरदार वल्लभभाई पटेल को.

मैं मानता हूँ कि सरदार वल्लभभाई पटेल **स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं एकता सेनानी भी थे**, यह इस दिन का महत्व है, इसलिए हम इस दिन को राष्ट्रीय एकता दिवस के तौर पर मनाते हैं.

लेकिन राष्ट्रीय एकता दिवस क्यों मनाना चाहिए?

स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं, गणतंत्र दिवस मनाते हैं, तो एकता दिवस क्यों मनाते हैं?

इसे भी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बड़े ही अच्छे शब्दों में समझाया है. पिछले साल जब उन्होंने इस दिवस पर बात की थी तो उन्होंने कहा था कि रक्षाबंधन क्यों मनाया जाता है? सब जानते हैं के भाइयों को बहनों से प्यार होता है, फिर रक्षा बंधन क्यों मनाना है, हर साल धागा क्यों बाँधना है? इसलिए क्योंकि इस प्यार को हर बार, हर साल नए तौर पर शुरुआत करनी पड़ती है, उसको दर्शाना पड़ता है?

इसी तरह से राष्ट्रीय एकता की भावना को भी दोहराना बहुत ज़रूरी है. इस दृढ़ संकल्प को और भी सुदृढ़ करता है. और ख़ास तौर पर भारत की बात करें, इसकी size, विविधता, मैंने विश्व के किसी भी देश में नहीं देखी है, इस situation को ध्यान में रखते हुए, इस राष्ट्रीय एकता के भाव को जीवित रखना, और उसे आगे बढ़ाना बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए आज के इस दिवस को हम छोटा ना समझें, यह दिवस उतना ही ज़रूरी है, जितना स्वतंत्रता दिवस है, गणतंत्र दिवस है.

अंत में मैं इतना ही कहना चाहूँगा कि बिना किसी भेद-भाव के भारत की विविधता का सम्मान ही राष्ट्रीय एकता का मतलब है. इसलिए ये

ज़रूरी है कि हम इस बात को abstract में ना लें, इस पर सोचें, अपने बच्चों को ये बात सिखाएँ.

भारतीय दूतावास पूरे भारत का एक microcosm है, यहाँ पर हम अलग-अलग जगहों से आते हैं, अलग-अलग संस्कार लेकर आते हैं, सारे धर्म को मानने वाले यहाँ बैठे हैं, but we are all known as Indians, that is the meaning of राष्ट्रीय एकता.

मैं आशा करता हूँ कि आज के इस दिवस पर, राष्ट्रीय एकता की भावना को आप अपने हृदय में, अपने परिवार में, अपने मित्रों, सहयोगियों में सुदृढ़ करेंगे, एकाकी और सामूहिक दोनों तौर पर इस भावना को बढ़ाने में मदद करेंगे, और इस भावना को और ऊपर लेकर जाएँगे.

आप सबको एक बार फिर एस अवसर पर मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

31 Oct 2017

***